(9)

उत्तर मुगल कालीन बुलन्दशहर का इतिहास
(1707–1857 ई०)

चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ की
इतिहास विषय में
पी एच० डी० उपाधि हेतु
शोध–प्रबन्ध का सारांश

शोध निर्देशक
प्रो० विघ्नेश कुमार
B.Sc., M.A. (History),
M.Phil. (Gold Medal), Ph.D.
इतिहास विभाग
चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

शोधार्थी
अल्पना पोसवाल
M.Sc., M.A. (History),
NET (UGC)

इतिहास विभाग
मेरठ कॉलिज, मेरठ
2019

सारांश

गंगा और यमुना के बीच के अन्तर्वेदी क्षेत्र, जिसे मध्यकाल के दौरान गंगा–यमुना दोआब कहा जाता रहा है, के ऊपरी भाग में अवस्थित वर्तमान उत्तर प्रदेश के मेरठ मण्डल के अन्तर्गत आने वाला जिला बुलन्दशहर का भूभाग–सुदूर अतीत से ही अत्यधिक ऐतिहासिक महत्व का भूभाग जान पड़ता है। उत्तर वैदिक कालीन कुरु और शूरसेन का सीमान्त क्षेत्र होने और चौथी शताब्दी ई0 पूर्व में नन्द वंश के अधीन उदीयमान मगध साम्राज्य में मिला लिये जाने पर भी इसका वैशिष्ट्य कम नहीं हुआ। मौर्य, कुषाण और गुप्त साम्राज्यों से लेकर परवर्ती गुप्तों एवं यशोधर्मा तथा मौखरी और आयुध शासकों के समय में इस भूभाग की महत्ता के प्रर्याप्त संकेत विद्यमान रहे। सम्राट् हर्षवर्धन और तदुपरान्त् विभिन्न राजवंशों के अधीन यह कन्नौज का महत्पूर्ण क्षेत्र बना रहा। 9वीं एवं 10वीं शताब्दी में गुर्जर प्रतिहार वंश के राज्यकाल से लेकर डोर वंश के स्थानीय शासकों तक इसका विशिष्ट महत्व परिलक्षित है।

डोर राजवंश के महत्वपूर्ण व्यक्ति अजयपाल ने षड्यन्त्र और कुलद्रोह करके 'बरन' के 'चौधरी' की पदवी और तदन्तर धर्मान्तरित होकर 'मलिक मुहम्मद दराज काद' नाम धारण किया। ऐबक से लेकर बलबन के उत्तराधिकारियों तक बरन का महत्व बना रहा। इल्तुतमिश के समय 'इक्ता' नामक प्रशासनिक इकाइयों के गठन की प्रक्रिया में बरन को 'इक्ता' मुख्यालय बनाया गया। तदपुरान्त अलाउद्दीन से लेकर तुगलकों, सैयदों और लोदी शासकों तक के सम्पूर्ण दिल्ली सल्तनत के काल खण्ड में इसकी महत्ता न्यूनाधिक रूप में अक्षुण्ण रही।

मुगलकाल में अकबर का शासनकाल इस दृष्टि से महत्व का है कि विवेच्य कालखण्ड का भौगोलिक परिक्षेत्र वस्तुतः समकालीन दो सूबों क्रमशः आगरा एवं दिल्ली के अधीन था। प्रायः इसका छोटा आधा भाग आगरा सूबे की कौल सरकार के अन्तर्गत एवं शेष बड़ा भाग दिल्ली सूबे की दिल्ली सरकार के अन्तर्गत था।

प्रस्तुत अध्ययन के सम्पूर्ण कालखण्ड पर विवेच्य दृष्टिपात करने पर प्रायः यही सर्वमान्य तथ्य उभरकर सामने आता है कि इस जिले के निवासी मुगल साम्राज्य की राजधानी दिल्ली के निकट अवस्थित होने से दिल्ली पर आये विविध

विक्षोभों से सर्वाधिक दुष्प्रभावित होने वाले व्यक्तियों में अग्रणी रहे। यद्यपि ईरानी आक्रान्ता नादिरशाह के 1739 ई० के दिल्ली अभियान ने उन्हें अत्यन्त संवेदनशील बना दिया था तथापि वे उससे प्रत्यक्ष रूप से दुष्प्रभावित होने से बचे रहे, किन्तु नादिरशाह के सेनापति के रूप में उसके साथ आये अहमदशाह अब्दाली ने दिल्ली का जो रास्ता देख लिया था, वह अन्ततः बुलन्दशहर के निवासियों के कालान्तर में सामूहिक नरसंहारों की वीभत्स श्रृंखला का कारण बनता दृष्टिगोचर हुआ। 1760 ई0 में दुर्रानी शासक विदेशी अक्रान्ता अहमदशाह अब्दाली का 'बुलन्दशहर जिले में निवास करना, महान् दुखों का कारण बना। तीन वर्ष पूर्व 1757 ई0 में उसके द्वारा अनूपशहर से लेकर सिकन्दराबाद तक किये गये हिन्दुओं के नरसंहार, स्थानीय भारतीयों की दुःस्मृतियों में सजीव होते रहे।

यद्यपि बुलन्दशहर सिन्धिया नियंत्रण में डेढ़ दशक तक रहा, किन्तु फिर भी यहाँ होल्कर का उपकृत दुन्दे खाँ जैसा साहसी व्यक्ति 1807 ई0 तक ब्रिटिश साम्राज्य का खुला शत्रु बना रहा। तत्पश्चात् सशस्त्र संघर्ष देकर कम्पनी को चोट पहुँचाने की प्रक्रिया अध्ययन काल के अन्तिम वर्ष अर्थात् 1857 ई0 में जितने विशद रूप में इस जिले में दिखाई पड़ी, वैसी अन्यत्र विरलता से ही परिलक्षित हुई।